e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 5, Issue 6, June 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.54

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 6, June 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0506012 |

व्यापार युद्ध और बदलती अन्तरराष्ट्रीय व्यवस्था : वैश्विकरण का संकट

डॉ सुधीर सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, गवर्नमेंट (पीजी) कॉलेज, राजाखेड़ा, धौलपुर, राजस्थान

सार

महामारी की वजह से जो आर्थिक चुनौतियां और व्यापारिक अनिश्चितताएं पैदा हुई हैं, वो ख़तरा नहीं बल्कि एक अवसर हैं. इनकी मदद से भविष्य में विश्व व्यापार संगठन के समझौतों को और अधिक 'बहुपक्षीय' , नए और गहरे व्यापारिक एकीकरण के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है. बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था का निर्माण दूसरे विश्व युद्ध के मलबे के ऊपर किया गया था. अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के शुरुआती निर्माताओं ने एक ऐसे विश्व की परिकल्पना की थी, जहां कारोबार और वाणिज्य के सूत्र तमाम देशों को आपस में इस तरह बांध लेंगे कि वो किसी तरह के संघर्ष का हिस्सा बनने से बचेंगे.इस विश्व व्यापार व्यवस्था का निर्माण उस वक़्त हुआ था, जब दुनिया बहुत अनिश्चितता के दौर से गुज़र रही थी. 1944 में जब दूसरा विश्व युद्ध चल ही रहा था, तभी दुनिया के बड़े नेता, अमेरिका के ब्रेटन वुड्स में इकट्ठे हुए थे. उन्होंने आपस में वार्ता करके अंतरराष्ट्रीय व्यापार संगठन (ITO) के गठन की योजना पर सहमति बनाई. हालांकि, ITO के गठन की कल्पना कभी साकार नहीं हुई. लेकिन, इसकी जगह पर व्यापार एवं करों के सामान्य समझौते (GATT) पर सहमति बनी. इस समझौते की अपनी सीमाएं थीं और इसकी संरचना केवल वस्तुओं के व्यापार के लिए की गई थी. उसके बाद के वर्षों में वैश्विक व्यापार व्यवस्था, 23 देशों के बीच एक अस्थायी 'भले मानुसों के समझौते' से काफ़ी आगे बढ़कर एक ऐसे संगठन के रूप में तब्दील हो चुकी है, जो व्यापार के नियमों का निर्माण एवं संचालन करने के साथ साथ व्यापारिक विवादों का निपटारा भी करता है.

आज बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था में 164 देशों की सरकारें शामिल हैं और इसके अंतर्गत दुनिया का 98 प्रतिशत अंतरराष्ट्रीय व्यापार होता है. इस समझौते के केंद्र में वो सिद्धांत है कि कोई भी देश इस समझौते में शामिल देशों के साथ वस्तुओं और सेवाओं के मामले में भेदभाव नहीं कर सकता (जैसे कि सबसे पसंदीदा देश का सिद्धांत) है. न ही इसमें शामिल कोई देश, अपने देश के कारोबारियों और विदेशी आयातों में भेदभाव कर सकता है (यानी राष्ट्रीय उद्योगों को तरज़ीह देना). बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था के ये अहम सिद्धांत पिछले सात दशकों में व्यापारिक नियमों के एक व्यापक दस्तावेज़ में परिवर्तित हो चुके हैं. इन नियमों के दायरे में आज वस्तुओं, सेवाओं और व्यापार संबंधी बौद्धिक संपदा के अधिकार भी शामिल हो चुके हैं.

परिचय

अत्यंत व्यापक व्यापारिक नीतियों के साथ साथ अंतरराष्ट्रीय व्यापार का भी अभूतपूर्व ढंग से विस्तार हो चुका है. विश्व व्यापार संगठन के आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2018 में हो रहा विश्व व्यापार, 1950 के वैश्विक व्यापार से लगभग 40 गुना अधिक था. विश्व के सकल आर्थिक उत्पाद (GDP) में व्यापार की हिस्सेदारी 1950 में लगभग पांच प्रतिशत थी, जो 2018 में बढ़कर 23 फ़ीसद हो चुकी थी. [1,2]हालांकि, इक्कीसवीं सदी की शुरुआत के साथ ही बहुत से नए व्यापार समझौते हुए हैं. इनके बावजूद, अभी भी क़रीब 80 प्रतिशत अंतरराष्ट्रीय व्यापार सर्वाधिक तरज़ीह दिए जाने वाले राष्ट्र की शर्तों के अनुरूप होता है. ये बात ख़ास तौर से कम विकसित देशों और ऐसे छोटे उद्योगों पर लागू होती है, जो क्षेत्रीय व्यापार के पेचीदा नियमों के अंतर्गत कारोबार नहीं कर सकते. ऐसे में कुछ साधारण, निष्पक्ष और बहुपक्षीय नियम, वैश्विक समाज के छोटे और और ग़रीब सदस्यों का जंगल के क़ानूनों से संरक्षण करते हैं. मौजूदा आर्थिक संदर्भ का एक विशेष आयाम ये है कि ये सघन रूप से आपस में जुड़ी वैश्विक वैल्यू चेन (GVC) के माध्यम से संचालित हो रहा है. इस वैल्यू चेन में उत्पादन का एक नेटवर्क है, जो दुनिया भर से सामान (जिन्हें माध्यमिक वस्तु कहा जाता है) को इकट्ठा करके उन्हें एक उत्पाद की शक्ल देता है. आज विश्व व्यापार का 80 प्रतिशत हिस्सा, ऐसी आपूर्ति श्रृंखलाओं के माध्यम

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 6, June 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0506012 |

से संचालित किया जाता है, जिन्हें बहुराष्ट्रीय कंपनियां चलाती हैं. आज माध्यमिक वस्तुओं का व्यापार, अंतिम तैयार उत्पाद से भी दोगुना है, और ये बात उन्नत स्तर के निर्माण पर ख़ास तौर से लागू होती है [2]. निर्माण एवं सेवाओं की गतिविधियां अब कई देशों में एक साथ चलाई जाती हैं. इससे कंपनियों को अलग अलग देशों में उत्पाद तैयार करने में आने वाली कम लागत का लाभ तो मिलता ही है, इससे तमाम देशों को उत्पादन की पूरी क्षमता का विकास किए बिना ही आपूर्ति श्रृंखलाओं का हिस्सा बनने का अवसर प्राप्त होता है.[3,4]

वैश्वीकरण ने निर्माताओं और उपभोक्ताओं को बहुत बड़े स्तर पर नए अवसर उपलब्ध कराए हैं. इससे विकासशील देशों के आपूर्तिकर्ता, वैश्विक वैल्यू चेन का हिस्सा बन जाते हैं. इन्होंने दुनिया के तमाम हिस्सों में लोगों का रहन-सहन सुधारने में अपना योगदान दिया है. लेकिन, इसके साथ ही साथ अंतरराष्ट्रीय व्यापार व्यवस्था कई चुनौतियों का भी सामना कर रही है. दुनिया के बहुत से हिस्सों में ऑटोमेशन और तकनीकी विकास ने निर्माण क्षेत्र की उत्पादकता को बेहतर बनाया है. पर, इसने कामकाजी तबक़े का एक बड़ा हिस्सा रोज़गार से वंचित हो गया है. अगर ऐसे लोगों के लिए सुरक्षा के घेरे और कामकाजी वर्ग को नए कौशल सिखाने की योजनाओं की व्यवस्था नहीं की जाती है, तो जो लोग तकनकी तरक़्क़ी और वैश्वीकरण के चलते नौकरियां पाने से वंचित रह जा रहे हैं, उनके बीच असंतोष पैदा होगा. डिजिटल तकनीक में और उन्नति होने से विकसित देशों में उच्च स्तर की नौकरियां कर रहे लोग भी बेरोज़गार हो सकते हैं. ये तर्क दिया जाता रहा है कि कोविड-19 के चलते डिजिटल संचार की तकनीकों को बड़े स्तर पर अपनाए जाने से, अब सर्विस सेक्टर में भी नौकरियों के अवसर कम होने का सिलसिला शुरू हो जाएगा. जो लोग दूसरे देशों में फ़ोन के जरिए काम कर रहे हैं, उनके कुछ कामों की जगह सॉफ्टवेयर रोबोट ले लेंगे [3] . इन चुनौतियों का सामना करने के लिए देशों को ऐसी घरेलू नीतियां बनानी होंगी, जिससे उन्हें अधिक सामाजिक सुरक्षा मिले, काम के लिए कहीं भी आने जाने के अवसर मिलें, और ये सुनिश्चित किया जाए कि तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण के लाभ का बंटवारा अधिक से अधिक लोगों के बीच हो सके.

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में आपसी संबंध के चलते कंपनियों, संगठनों और व्यक्तियों को अधिक अवसर उपलब्ध कराए हैं. लेकिन, इन अवसरों के साथ साथ इन कंपनियों के सामने दुनिया में अनिश्चितता के संभावित ख़तरे भी बढ़ गए हैं. जैसा कि कोविड-19 महामारी ने स्पष्ट तौर पर दिखाया है कि एक क्षेत्र को लगा झटका, कुछ ही घंटों या दिनों के अंदर बड़ी आसानी से किसी अन्य देश को अपनी चपेट में ले लेता है. किसी भी वैश्विक संकट की स्थिति में कोई भी देश, पूरी तरह आत्मनिर्भर नहीं हो सकता है. ऐसे में व्यापार बेहद कम लागत में एक ऐसा रास्ता मुहैया कराता है जिससे महत्वपूर्ण सामान जल्द से जल्द ज़रूरतमंद लोगों तक पहुंचाया जा सके. जर्मनी, अमेरिका और स्विटज़रलैंड, दुनिया के कुल मेडिकल उत्पादों के 35 प्रतिशत हिस्से की आपूर्ति करते हैं. वहीं, चार देश-सिंगापुर, अमेरिका, नीदरलैंड्स और चीन दुनिया के आधे से अधिक वेंटिलेटर की आपूर्ति करने वाले देश हैं [5] . सभी लोगों की अच्छी सेहत के लिए ज़रूरी है कि बेहद महत्वपूर्ण मेडिकल सामान, कृषि क्षेत्र के अहम उत्पाद व अन्य वस्तुएं और सेवाएं, तमाम देशों को पहुंचाई जा सकें. दुनिया में जेनेरिक दवाओं के सबसे बड़े उत्पादक भारत द्वारा जब वर्ष 2020 में ऐसी मलेरिया निरोधक दवाओं के आयात पर लगा प्रतिबंध हटाया गया था, जो कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों के इलाज में काम आ सकती थीं. इसके माध्यम से भारत ने वैश्विक महामारी से निपटने में अपनी प्रतिबद्धता का ही प्रदर्शन किया था [6] . अभी हाल ही में भारत कोरोना वायरस की वैक्सीन के निर्माण और उनके वितरण के वैश्विक प्रयासों की अगुवाई भी कर रहा था.[5,6]

वैश्वीकरण ने दुनिया को पहले से कहीं अधिक, आपस में जोड़ने का काम किया है. पिछले बीस वर्षों के दौरान विकासशील देशों में निर्माण और उत्पादन के नए केंद्रों का विकास हुआ है. ये कम नहीं हुआ है. इससे किसी महामारी के दौरान अचानक उम्मीद के विपरीत मांग बढ़ने पर कई देश मिलकर ज़रूरी सामानों की आपूर्ति कर सकते हैं . अंतरराष्ट्रीय व्यापार और सीमाओं के आर पार फैली आपूर्ति श्रृंखलाएं न केवल अधिक कुशलता व कम लागत से उत्पाद के निर्माण की ओर ले जाती हैं. बल्कि, इनकी मदद से नई दवाओं और मेडिकल तकनीक के विकास के लिए व्यापक स्तर पर रिसर्च किया जा सकता है [8]. 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने की कुंजी कम बहुपक्षीयवाद नहीं बल्कि अधिक से अधिक बहुपक्षीय सहयोग ही है. विश्व के स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और सामाजिक व्यवस्थाओं को जल्द से जल्द महामारी से उबारने के लिए, मेडिकल आपूर्ति सुनिश्चित करने, आपातकालीन योजनाएं और आपस में समन्वय के साथ प्रयास करने से महत्वपूर्ण वस्तुओं का भंडार तैयार करने, निर्माण केंद्रों और आपूर्ति करने वालों में अधिक विविधता लाने और सरकारों द्वारा सख्त नियमों का पालन करने से ढील देने में त्वरित क़दम उठाए जाने की

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 6, June 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0506012 |

ज़रूरत है [9]. ऐसी नीतियों को लागू करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निर्णायक, मज़बूत और आपसी समन्वय वाले प्रयास करने की ज़रूरत है.

अधिक अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने की इस आवश्यकता के दायरे में अन्य वैश्विक चुनौतियां भी आती हैं. इसकी एक मिसाल विश्व व्यापार संगठन के देशों द्वारा ऐसी सब्सिडी कम करने का प्रयास है, जो दुनिया में मछलियों के भंडार को घटने में योगदान देती हैं. ऐसी चुनौतियों से तमाम देशों के बीच सहयोग के माध्यम से ही निपटा जा सकता है. उभरती हुई डिजिटल तकनीक के कारण पैदा हुई नीतिगत चुनौतियों से निपटने के लिए आज अधिक सघन प्रयास करने की आवश्यकता है. बहुत से देश आज विश्व व्यापार संगठन और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर एक-साथ मिलकर, डिजिटल व्यापार की नीतियों, टैक्स व्यवस्था में सुधार, आमदनी की असमानताओं से निपटने का प्रयास कर रहे हैं.[7,8]

महामारी की वजह से जो आर्थिक चुनौतियां और व्यापारिक अनिश्चितताएं पैदा हुई हैं, वो ख़तरा नहीं बल्कि एक अवसर हैं. इनकी मदद से भविष्य में विश्व व्यापार संगठन के समझौतों को और अधिक 'बहुपक्षीय' , नए और गहरे व्यापारिक एकीकरण के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है [11].

वैश्वीकरण ने दुनिया को कई आयामों में बेहतर बनाया है. आज वैश्वीकृत दुनिया में पल-बढ़ रहे लोग, आवाजाही के लिए अधिक स्वतंत्र हैं, खुले विचारों के हैं और पहले की पीढ़ियों की तुलना में अन्य लोगों के साथ मिलकर रहने के लिए तैयार हैं. वैश्वीकरण की चुनौतियों का समाधान न तो दीवारें बनाना है और न ही खुद को अलग-थलग करना है. बल्कि, इन वैश्विक समस्याओं का समाधान हम साथ काम करके ही निकाल सकते हैं.

विचार-विमर्श

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं या क्षेत्रों के आर-पार पूंजी, माल और सेवाओं का आदान-प्रदान है।[1]. अधिकांश देशों में, यह सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के महत्त्वपूर्ण अंश का प्रतिनिधित्व करता है। जबकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, इतिहास के अधिकांश भाग में मौजूद रहा है (देखें सिल्क रोड, एम्बर रोड) इसका आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक महत्व हाल की सदियों में बढ़ने लगा है।अंतर्राष्ट्रीय व्यापार व्यवस्था पर औद्योगीकरण, उन्नत परिवहन, वैश्वीकरण, बहुराष्ट्रीय निगम और बाह्यस्रोत से कार्यनिष्पादन, इन सभी का व्यापक प्रभाव पड़ता है। वैश्वीकरण की निरंतरता के लिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में बढ़ोतरी महत्त्वपूर्ण है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के बिना, देश सिर्फ़ अपनी खुद की सीमा के भीतर उत्पादित माल और सेवाओं तक सीमित रह जाएंगे.[9,10]

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, सिद्धांत रूप में घरेलू व्यापार से भिन्न नहीं है क्योंकि एक व्यापार में शामिल पक्षों की अभिप्रेरणा और व्यवहार मौलिक रूप से बदलता नहीं है भले ही व्यापार सीमा पार का हो या नहीं। मुख्य अंतर यह है कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार आम तौर पर घरेलू व्यापार से अधिक महंगा है। इसका कारण है कि एक सीमा आम तौर पर अतिरिक्त शुल्क लगाती है जैसे प्रशुल्क, सीमा पर विलंब के कारण आवधिक लागत और भाषा, कानूनी प्रणाली या संस्कृति जैसे देशीय भिन्नताओं से जुड़ी लागतें.

घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के बीच एक और अंतर यह है कि पूंजी और श्रम जैसे उत्पादन कारक आम तौर पर बाहर की तुलना में देशों के भीतर अधिक गतिशील होते हैं। इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार ज्यादातर माल और सेवाओं के व्यापार तक सीमित है और पूंजी, श्रम या उत्पादन के अन्य कारकों के व्यापार में केवल एक छोटे पैमाने पर. इसके अलावा माल और सेवाओं का व्यापार, उत्पादन कारकों में व्यापार के लिए एक विकल्प के रूप में कार्य कर सकता है। उत्पादन का एक कारक आयात करने के बजाय, एक देश माल आयात कर सकता है जो उत्पादन के कारक का गहन इस्तेमाल करे और इस प्रकार संबंधित कारक को सम्मिलित कर ले. एक उदाहरण है, चीन से संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा श्रम-प्रधान वस्तुओं का आयात. चीनी श्रम का आयात करने के बजाय अमेरिका, चीन से ऐसे माल आयात कर रहा है जिसे चीनी श्रम के इस्तेमाल से उत्पादित किया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, अर्थशास्त्र की एक शाखा भी है, जो अंतर्राष्ट्रीय वित्त के साथ मिलकर अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र की विस्तृत शाखा का निर्माण करती है। परंपरागत रूप से दो देशों के बीच व्यापार द्विपक्षीय संधियों के माध्यम से विनियमित किया जाता था। कई सदियों तक वणिकवाद में विश्वास के तहत अधिकांश देशों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर सीमा शुल्क उच्च था और कई प्रतिबंध थे।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 6, June 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0506012 |

19वीं सदी में, विशेष रूप से यूनाइटेड किंगडम में, मुक्त व्यापार में विश्वास सर्वोपरि बन गया।[कृपया उद्धरण जोड़ें] उसके बाद से यह धारणा पश्चिमी देशों के बीच प्रभावी सोच बन गई। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के वर्षों में, विवादास्पद बहुपक्षीय संधियों जैसे जनरल एग्रीमेंट ऑन टैरिफ एंड ट्रेड (GATT) और विश्व व्यापार संगठन ने वैश्विक स्तर पर विनियमित व्यापार ढांचे को निर्मित करते हुए मुक्त व्यापार को बढ़ावा देने का प्रयास किया। इन व्यापार समझौतों ने, अनुचित व्यापार के दावों के साथ जो विकासशील देशों के लिए लाभदायक नहीं हैं, अक्सर विरोध और असंतोष को जन्म दिया है।[11,12]

मुक्त व्यापार का आम तौर पर, आर्थिक रूप से सर्वाधिक मज़बूत देशों द्वारा सबसे अधिक समर्थन किया जाता है, हालांकि वे अक्सर उन उद्योगों के लिए चयनात्मक संरक्षणवाद में संलग्न होते हैं जो रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण हैं, जैसे अमेरिका और यूरोप द्वारा कृषि पर लगाया जाने वाला सुरक्षात्मक प्रशुल्क.[कृपया उद्धरण जोड़ें] नीदरलैंड और यूनाइटेड किंगडम उस वक्त मुक्त व्यापार के कट्टर पैरोकार थे जब वे आर्थिक रूप से प्रभावशाली थे, आज संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, ऑस्ट्रेलिया और जापान इसके सबसे बड़े समर्थक हैं। हालांकि, कई अन्य देश (जैसे भारत, चीन और रूस) तेज़ी से मुक्त व्यापार के हिमायती बनते जा रहे हैं क्योंकि वे आर्थिक रूप से खुद अधिक शक्तिशाली बन रहे हैं। जैसे-जैसे प्रशुल्क स्तर में गिरावट आ रही है, गैर-प्रशुल्क उपायों पर चर्चा करने की इच्छा भी बढ़ रही है, जिसमें शामिल है विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, वसूली और व्यापार सरलीकरण.[कृपया उद्धरण जोड़ें] व्यापार सरलीकरण में सीमा शुल्क प्रक्रियाओं और व्यापार को पूरा करने से संबंधित लेनदेन लागत पर ध्यान दिया जाता है।

परंपरागत रूप से कृषि हित, आम तौर पर मुक्त व्यापार के पक्ष में हैं जबकि विनिर्माण क्षेत्र अक्सर संरक्षणवाद का समर्थन करते हैं।[कृपया उद्धरण जोड़ें]हालांकि, हाल के वर्षों में इसमें कुछ हद तक बदलाव आया है। वास्तव में, कृषि से जुड़े गुट, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप और जापान में, प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संधियों में ख़ास नियमों के लिए मुख्यतः जिम्मेदार हैं जो अधिकांश अन्य वस्तुओं और सेवाओं की अपेक्षा कृषि में अधिक संरक्षणवादी उपायों की अनुमति देते हैं।

मंदी के दौरान, घरेलू उद्योगों की रक्षा के लिए प्रशुल्क बढ़ाने का अक्सर अत्यधिक घरेलू दबाव होता है। महान मंदी के दौरान यह दुनिया भर में हुआ। कई अर्थशास्त्रियों ने विश्व व्यापार में पतन के लिए प्रशुल्क को अंदरूनी कारण के रूप में रेखांकित करने का प्रयास किया है जिसके लिए कई लोगों का मानना है कि इसने मंदी को अधिक विकट कर दिया।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का विनियमन, विश्व व्यापार संगठन के माध्यम से वैश्विक स्तर पर किया जाता है और कई अन्य क्षेत्रीय व्यवस्था के माध्यम से जैसे दक्षिण अमेरिका में MERCOSUR, अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको के बीच नॉर्थ अमेरिकन फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (NAFTA) और 27 स्वतंत्र देशों के बीच यूरोपीय संघ. फ्री ट्रेड एरिया ऑफ़ द अमेरिका (FTAA) की योजनाबद्ध स्थापना पर 2005 ब्यूनस आयर्स वार्ता, मुख्य रूप से लैटिन अमेरिकी देशों की आबादी के विरोध से विफल हो गई। ऐसे ही अन्य समान समझौते जैसे कि मल्टीलेटरल एग्रीमेंट ऑन इन्वेस्टमेंट (MAI) भी हाल के वर्षों में विफल हो गए।[13,14]

परिणाम

अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के पार व्यापार कर रही कंपनियां, उन्हीं समान जोखिमों का सामना करती हैं जो सामान्य रूप से कट्टर घरेलू लेन-देन में प्रदर्शित होता है। उदाहरण के लिए,

क्रेता दिवालियापन (खरीदार भुगतान नहीं कर सकता);

अस्वीकृति

त विनिर्देशों से भिन्न होने पर खरीदार माल खारिज कर देता है);

ऋण जोखिम (भुगतान करने से पहले खरीदार को माल का कब्जा लेने की अनुमति देना);

नियामक जोखिम (जैसे, नियमों में परिवर्तन जो लेन-देन को रोकता है);

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 6, June 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0506012 |

हस्तक्षेप (एक लेन-देन को पूरा होने से रोकने के लिए सरकारी कार्रवाई);

राजनीतिक जोखिम (नेतृत्व में परिवर्तन जो लेन-देन या कीमतों के साथ हस्तक्षेप करता है) और

युद्ध और अन्य अनियन्त्रणीय घटनाएं.

इसके अलावा, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, प्रतिकूल विनिमय दर आंदोलनों के जोखिम का भी सामना करता है (और अनुकूल आंदोलनों का संभावित लाभ)[15]

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से वैश्वीकरण मुख्य रूप से अर्थशास्त्रीयों, व्यापारिक हितों और राजनीतिज्ञों के नियोजन का परिणाम है जिन्होंने संरक्षणवाद और अन्तरराष्ट्रीय आर्थिक एकीकरण में गिरावट के मूल्य को पहचाना। उनके काम का नेतृत्व ब्रेटन वुड्स सम्मेलन और इस दौरान स्थापित हुई कई अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं ने किया, जिनका उद्देश्य वैश्वीकरण की नवीनीकृत प्रक्रिया का निरीक्षण, इसको बढ़ावा देना और इसके विपरीत प्रभावों का प्रबन्धन करना था।

इन संस्थाओं में पुनर्निर्माण और विकास के लिए अन्तरराष्ट्रीय बैंक (विश्व बैंक) और अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष शामिल हैं। वैश्वीकरण में तकनीक के आधुनिकीकरण के कारण यह सुविधा हुई, जिसने व्यापार और व्यापार वार्ता दौर की लागत को कम कर दिया, मूल रूप से शुल्क तथा व्यापार पर सामान्य समझौते (General Agreement on Tariffs and Trade) (GATT) के तत्वावधान के अन्तर्गत ऐसा हुआ है जिसके चलते कई समझौतों में मुक्त व्यापार पर से प्रतिबन्ध हटा दिया गया।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से, अन्तरराष्ट्रीय व्यापार अवरोधों में अन्तरराष्ट्रीय समझौतों GATT के माध्यम से लगातार कमी आई है। GATT के परिणामस्वरूप कई विशेष पहल की गईं और इसमें विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ), जिसके लिए GATT आधार है, शामिल है।

- मुक्त व्यापार का संवर्धन:
  - शुल्क में कमी या समाप्ति; कम या शून्य

शुल्क के साथ मुक्त व्यापार क्षेत्र का निर्माण.

  -
  - विशेष रूप से समुद्र नौवहन के लिए डिब्बाबन्दीकरण (containerization) के विकास के परिणामस्वरूप होने वाले परिवहन मूल्य में कमी.
  - पूँजी नियन्त्रण (capital controls) में कमी या कटौती
  - स्थानीय व्यवसाय के लिए सब्सिडी में कटौती, उन्मूलन, या सम्मिश्रण
- मुक्त व्यापार पर प्रतिबन्ध :
  - कई राज्यों में बौद्धिक सम्पदाके हार्मोनीकरण कानून अधिक प्रतिबन्धों के साथ लागू हैं।
  - बौद्धिक सम्पदा प्रतिबन्धों की पराराष्ट्रीय मान्यता (उदा. चीन से प्राप्त पेटेण्ट अमेरिका में मान्य होगा)

उरुग्वे वार्ता (Uruguay Round) (1984 से 1995) में एक सन्धि हुई, जिसके अनुसार WTO व्यापारिक विवादों में मध्यस्थता करेगा और व्यापार के लिए एक एकीकृत मंच उपलब्ध कराएगा। अन्य द्विपक्षीय और बहुपक्षीय व्यापार समझौते जिसमें मास्ट्रिच संधि और उत्तरी अमेरिका मुक्त व्यापार समझौते (एन ऐ एफ टी ऐ) शामिल हैं, इसका लक्ष्य भी व्यापार के अवरोधों और मूल्यों को कम करना है।

विश्व निर्यात में वृद्धि हुई है जो 1970 में विश्व सकल उत्पाद (gross world product) के 8.5% से बढ़कर 2001 में 16.1% हो गया। वैश्वीकरण शब्द का उपयोग (सैद्धान्तिक मायने में), इन विकासों के सन्दर्भ में विश्लेषण के लिए नोएम शोमस्की समेत कईयों के द्वारा किया गया।आलोचकों ने देखा है कि समकालीन उपयोग में इस शब्द के कई अर्थ हैं, उदाहरण के लिए Noam

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 6, June 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0506012 |

Chomsky कहते हैं कि :

वैश्वीकरण के कई पहलू हैं जो दुनिया को कई भिन्न प्रकार से प्रभावित करते हैं जैसे:

- औद्योगिक (उर्फ ट्रांस राष्ट्रीयकरण) - विश्व व्यापी उत्पादन बाजारों का उद्भव और उपभोक्ताओं तथा कम्पनियों के लिए विदेशी उत्पादों की एक श्रृंखला तक व्यापक पहुँच। ट्रांस राष्ट्रीय निगमों के अन्दर और उनके बीच सामग्री और माल का आवागमन और श्रम आपूर्ति करने वाले गरीब देशों और लोगों के व्यय पर, सम्पन्न राष्ट्रों और लोगों की माल तक पहुँच।
- वित्तीय विश्व व्यापी वित्तीय बाजार की उत्पत्ति और राष्ट्रीय, कॉर्पोरेट और उप राष्ट्रीय उधारकर्ताओं के लिए बाह्य वित्त पोषण करने के लिए बेहतर पहुँच। आवश्यक रूप से नहीं, परन्तु समकालीन वैश्विकता अधीन या गैर-नियामक विदेशी आदान-प्रदान का उद्भव है और सट्टा बाज़ार निवेशकों के मुद्रास्फीति और वस्तुओं, माल की कृत्रिम मुद्रा स्फीति की तरफ़ बढ़ रहा है और कुछ मामलों में एशियाई आर्थिक उछाल के साथ सभी राष्ट्रों का इसकी चपेट में आना मुक्त व्यापार के द्वारा हुआ है।
- आर्थिक-माल और पूँजी के विनिमय की स्वतन्त्रता के आधार पर एक वैश्विक साझा बाजार की वास्तविकता.[16]
- राजनीतिक - राजनैतिक वैश्वीकरण विश्व सरकार का एक गठन है जो राष्ट्रों के बीच सम्बन्ध का नियमन करता है तथा सामाजिक और आर्थिक वैश्वीकरण से उत्पन्न होने वाले अधिकारों की गारंटी देता है।राजनीतिक रूप से, संयुक्त राज्य अमेरिका ने विश्व शक्तियों के बीच एक शक्ति के पद का आनन्द उठाया है; ऐसा इसकी प्रबल और संपन्न अर्थव्यवस्था के कारण है।

वैश्वीकरण के प्रभाव के साथ और संयुक्त राज्य अमेरिका की अपनी अर्थव्यवस्था, की मदद से साथ चीन के जनवादी गणराज्य ने पिछले दशक में जबरदस्त विकास का अनुभव किया है। यदि चीन प्रवृत्तियों द्वारा निर्धारित इसी दर से विकास करता रहा, तो बहुत सम्भव है कि अगले बीस वर्षों में वह विश्व नेताओं के बीच सत्ता की एक प्रमुख धुरी बन जाएगा.चीन के पास प्रमुख विश्व शक्ति के पद के लिए अमरीका का विरोध करने हेतु पर्याप्त धन, उद्योग और तकनीक होगी. यूरोपीय संघ, रूसी संघ और भारत पहले से ही स्थापित विश्व शक्तियों में हैं जिनके पास सम्भवतया भविष्य में दुनिया की राजनीति को प्रभावित करने की क्षमता है।

- सूचनात्मक - भौगोलिक दृष्टि से दूरस्थ स्थानों के बीच सूचना प्रवाह में वृद्धि.तार्किक रूप से फ़ाइबर ऑप्टिक संचार, उपग्रहों के आगमन और इण्टरनेटऔर टेलीफोन की उपलब्धता में वृद्धि के साथ यह एक तकनीकी परिवर्तन है, जो सम्भवतः वैश्वीकरण के आदर्शवाद से असंबद्ध या इसमें सहायक है।

- सांस्कृतिक -पार-सांस्कृतिक सम्पर्कों की वृद्धि; चेतना (consciousness) की नई श्रेणियों का अवतरण और पहचान जैसे वैश्विकता-इसमें शामिल है सांस्कृतिक प्रसार, विदेशी उत्पादों और विचारों का उपभोग (consume) करने और आनंद उठाने की इच्छा, नई प्रौद्योगिकी और पद्धतियों को अपनाना और "विश्व संस्कृति" में भाग लेना; भाषाओं की हानि (और इसी क्रम में विचारों की हानि), साथ ही देखें संस्कृति का रूपांतरण (Transformation of culture).[14]
- पारिस्थितिकी-वैश्विक पर्यावरण का आगमन चुनौती देता है जिसे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, के बिना हल नहीं किया जा सकता है, जैसे जलवायु परिवर्तन सीमा-पार जल और वायु प्रदूषण, समुद्र में सीमा से ज्यादा मछली पकड़ना. और आक्रामक प्रजातियों के प्रसार.विकासशील देशों में, कई कारखानों का निर्माण किया गया है, जहाँ वे स्वतन्त्र रूप से प्रदुषण कर सकते हैं। वैश्विकता और मुक्त व्यापार प्रदूषण बढ़ाने के लिए अन्योन्य क्रिया करते हैं और एक गैर पूँजीवादी विश्व में हमेशा से विकसित हो रही पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के नाम पर इसे त्वरित करते हैं। हानि फिर से गरीब राष्ट्रों के हिस्से में आती है जबकि लाभ सम्पन्न राष्ट्रों के हिस्से में।
- सामाजिक -कम प्रतिबन्धों के साथ सभी राष्ट्रों के लोगों के द्वारा प्रवाह में वृद्धि हुई है। कहा जाता है कि इन देशों के लोग इतने संपन्न हैं कि वे अन्तरराष्ट्रीय यात्रा का खर्च वहन कर सकते हैं, जिसे दुनिया की अधिकांश जनसँख्या वहन नहीं कर सकती है। अभिजात्य और सम्पन्न वर्ग के द्वारा मान्यता प्राप्त एक भ्रमित 'लाभ', जो ईंधन और परिवहन की लागत में वृद्धि के साथ बढ़ता है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 6, June 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0506012 |

- परिवहन-हर साल यूरोप की सड़कों पर कम से कर कारें (ऐसा ही अमेरिकी सड़कों पर अमेरिकी कारों के लिए कहा जा सकता है) और प्रौद्योगिकी के समावेशन के माध्यम से दूरी व यात्रा के समय में कमी।यह एक तकनीकी उन्नति है जो श्रम प्रधान बाजारों के बजाय सूचना में काम कर रहे लोगों के द्वारा मान्यता प्राप्त है, अधिक के बजाय कम लोगों की पहुँच में है और यदि यह वास्तव में वैश्वीकरण का प्रभाव है तो यह समग्र मानवता के लिए लाभ के समान रूप से आवण्टन के बजाय स्रोतों के असमान आवण्टन को प्रतिबिंबित करता है।
- अन्तरराष्ट्रीय सांस्कृतिक विनिमय
  - बहुसंस्कृतिवाद का प्रसार और सांस्कृतिक विविधता के लिए बेहतर व्यक्तिगत पहुँच (उदाहरण हॉलीवुड और बॉलीवुड फिल्मों के निर्यात के माध्यम से) हालाँकि, आयातित संस्कृति आसानी से स्थानीय संस्कृति को सम्पूरित करती है, यह संकरण या आत्मसातीकरण (assimilation) के माध्यम से विविधता में कमी का कारण है।
  - अन्तरराष्ट्रीय यात्रा और पर्यटनकुछ लोगों के लिए ही महान है, जो अन्तरराष्ट्रीय यात्रा और पर्यटन का खर्च वहन कर सकते हैं।
  - ब्रिटेन, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका, जैसे देशों ने अप्रवास सहित अधिक गैर-कानूनी अप्रवास, जिन्होंने 2008 में गैर-कानूनी आप्रवासियों को हटाया तथा गैर-कानूनी रूप से देश में प्रवेश कर गए लोगों को आसानी से हटाने के लिए कानूनों में संशोधन किया। इनके अतिरिक्त अन्य ने इस बात को सुनिश्चित किया कि अप्रवास नीतियाँ अनुकूल अर्थव्यवस्था को प्रभावित करें, प्राथमिक रूप से उस पूँजी पर ध्यान दिया गया जो अप्रवासी अपने साथ देश में ला सकते हैं।
  - स्थानीय उपभोक्ता उत्पादों (जैसे भोजन) का अन्य देशों (अक्सर उनकी संस्कृति में स्वीकृत) में प्रसार इसमें आनुवांशिक रूप से परिष्कृत जीव शामिल हैं। वैश्विक वृद्धि अर्थव्यवस्था का एक नया और लाक्षणिक गुण है एक लाइसेंस युक्त बीज का जन्म जो केवल एक ही मौसम के लिए सक्षम होगा और अगले मौसम में इसे पुनः नहीं उगाया जा सकेगा-जो एक निगम के लिए गृहीत बाजार (captive market) को सुनिश्चित करेगा. सम्पूर्ण राष्ट्रों की खाद्य आपूर्ति एक कम्पनी के द्वारा नियन्त्रित होती है जो संभवतः विश्व बैंक या आईएमएफ ऋण शर्तों के माध्यम से.ऐसे GMOs के क्रियान्वयन में सफल है।[15]
  - विश्व व्यापक फेड्स और पॉप संस्कृति जैसे पॉकेमॉन (Pokémon), सुडोकू, नूमा नूमा (Numa Numa), ओरिगेमी (Origami), आदर्श श्रृंखला (Idol series), यू ट्यूब, ऑरकुट, फेसबुक और मायस्पेस, ये उन लोगों की पहुँच में हैं जो टी वी या इंटरनेट का उपयोग करते हैं, ये धरती की जनसँख्या का एक महत्वपूर्ण भाग छोड़ देते हैं।
  - विश्व व्यापक खेल की घटनाओं जैसे फीफा विश्व कप और ओलिंपिक खेलों.
  - सार्वभौमिक मूल्य मूल्यों के समूह का निर्माण या विकास --संस्कृति का समरुपीकरण .
- तकनीकी
  - एक वैश्विक दूरसंचार बुनियादी सरंचना (global telecommunications infrastructure) का विकास और सीमा पार आँकड़ों का अधिक प्रवाह, साथ ही ऐसी तकनीकों का उपयोग जैसे इण्टरनेट, संचार उपग्रहों, समुद्र के भीतर फ़ाइबर ऑप्टिक केबल (submarine fiber optic cable) और वायरलेस टेलीफोन
  - विश्व स्तर पर लागू मानकों की संख्या में वृद्धि ; कॉपीराइट का कानून, पेटेण्ट और विश्व व्यापार समझौते.
- कानूनी / नैतिक
  - अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय और अन्तरराष्ट्रीय न्याय आन्दोलनों का निर्माण.
  - वैश्विक अपराध से लड़ने के लिए प्रयास और सहयोग हेतु जागरूकता को बढ़ाना तथा अपराध आयात (Crime importation).
  - यौन जागरूकता - वैश्वीकरण के केवल आर्थिक पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करना अक्सर आसान होता है। इस शब्द के पीछे मजबूत सामाजिक अर्थ छिपा है। वैश्वीकरण का मतलब विभिन्न देशों के बीच सांस्कृतिक बातचीत भी हो सकता है। वैश्वीकरण के सामाजिक प्रभाव भी हो सकते हैं जैसे लैंगिक असमानता में परिवर्तन और इस मुद्दे को

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 6, June 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0506012 |

लेकर पूरी दुनिया में लिंग विभेद (अक्सर अधिक क्रूर) के प्रकारों पर जागरूकता फैलाने का प्रयास किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, अफ्रीकी देशों में लड़कियों और महिलाओं को लंबे समय से महिला खतना का शिकार बनाया जा रहा है - ऐसी हानिकारक प्रक्रिया अब पूरे विश्व के सामने आ चुकी है, अब इस प्रथा में कुछ कमी आ रही है।

- दौलत में बढोतरी बहुत कम लोगों के पास हो रही है। मीडिया और अन्य बहुराष्ट्रीय विलायक समाज और उत्पादन के एक बड़े भाग को नियंत्रित करते हुए कुछ निगमों का नेतृत्व करते हैं। मध्यम वर्ग में कमी और गरीबी में वृद्धि वैश्वीकृत और अविनियमित देशों में देखी जा सकती है। वैश्वीकरण दुनिया के इतिहास में सबसे बड़े सम्प्रभु ऋण अपराध, 2002 में सम्पूर्ण अर्जेण्टीना के दिवालियेपन के लिए जिम्मेदार था। फ़िर भी वैश्वीकरण ने इन बड़े निगमों में व्यापार और वित्त को लाभ पहुँचाया और बहुराष्ट्रीय बैंक 40 अरब डॉलर से अधिक नकद को अर्जेण्टीना से बाहर भेजने में सक्षम हुए, क्योंकि इस अविनियमित और वैश्वीकृत देश में उन्हें ऐसा करने से रोकने के लिए कोई विनियमन नहीं था।

वैश्वीकरण के विरोधी तर्क देते हैं कि बैंक नागरिकों को उनके अपने खातों में बन्द कर देतें हैं, 60 प्रतिशत या इससे अधिक बेरोजगारी की दर और एक पूरे देश का बैंक दिवालिया हो जाना वैश्वीकरण के खिलाफ तर्क हैं।

आम तौर पर माना जाता है कि मुक्त व्यापार (free trade), पूँजीवाद और लोकतंत्र के विचार व्यापक रूप से वैश्वीकरण को बढ़ावा देते हैं। मुक्त व्यापार (free trade) के समर्थकों का दावा है कि यह आर्थिक समृद्धि और अवसरों को विशेष रूप से विकासशील राष्ट्रों में बढाता है, नागरिक स्वतंत्रताओं को बढाता है, इससे संसाधनों के अधिक कुशल आवंटन में मदद मिलती है। तुलनात्मक लाभ (comparative advantage) के आर्थिक सिद्धांतों की सलाह के अनुसार मुक्त व्यापार संसाधनों के अधिक कुशल आवंटन को बढ़ावा देता है, साथ ही सभी देश व्यापार लाभ में शामिल होते हैं।

सामान्य रूप में, यह विकासशील देशों के निवासियों के लिए कम कीमतों, अधिक रोजगार, उच्च उत्पादन और उच्च जीवन स्तर को बढ़ावा देता है।

उदारवादी (Libertarians) और अहस्तक्षेप पूँजीवाद (laissez-faire capitalism) के समर्थकों का कहना है कि विकसित देशों में लोकतंत्र और पूँजीवाद के रूप में राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता (economic freedom) का उच्च अंश अपने आप में समाप्त हो जाता है तथा साथ ही संपत्ति के उच्च स्तर का उत्पादन करता है। वे वैश्वीकरण को उदारता और पूँजीवाद के लाभकारी प्रसार के रूप में देखते हैं।

लोकतांत्रिक वैश्वीकरण (democratic globalization) के समर्थक कभी कभी वैश्विकता समर्थक भी कहलाते हैं।उनका मानना है कि वैश्वीकरण की पहली प्रावस्था बाजार-उन्मुख थी, विश्व नागरिक (world citizen) नागरिकों की इच्छाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले निर्माणात्मक विश्वस्तरीय राजनीतिक संस्थानों को इनका अनुसरण करना चाहिए. अन्य वैश्विकतावादियों की भिन्नता यह है कि वे इस विचारधारा को आधुनिक रूप में परिभाषित नहीं करते हैं, लेकिन वे एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से इसे इन नागरिकों के स्वतंत्र चुनाव के लिए छोड़ देंगे.[16]

सीनेटर (Senator) डगलस रोशे (Douglas Roche), ओ.सी. (O.C.), जैसे कुछ लोग वैश्वीकरण को स्वतंत्र वकालत संस्थानों के रूप में देखते हैं, जैसे सीधे-निर्वाचित (directly-elected) संयुक्त राष्ट्र संसदीय विधानसभा (United Nations Parliamentary Assembly) जो अनिर्वाचित अन्तरराष्ट्रीय निकायों का निरीक्षण करते हैं।

वैश्वीकरण के समर्थकों का तर्क है कि वैश्वीकरण विरोधी आंदोलन अपने संरक्षणवादी दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए उपाख्यानात्मक (anecdotal evidence) का उपयोग करते हैं, जबकि विश्व भर के आँकड़े प्रबलता से वैश्वीकरण का समर्थन करते हैं।

- विश्व बैंक के आंकड़ों के हिसाब से, 1981 से 2001 तक, १ डॉलर या उससे भी कम पर प्रतिदिन जीने वाले लोगों की संख्या 1.5 अरब से 1.1 अरब हो गई है। इसी समय, दुनिया में जनसँख्या वृद्धि हुई, इसीलिए विकास शील राष्ट्रों में ऐसे लोगों का प्रतिशत 40 से कम होकर 20 हो गया।अर्थव्यवस्था में बहुत अधिक सुधार ने व्यापार और निवेश में बाधाओं को

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 6, June 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0506012 |

कम किया; फिर भी, कुछ आलोचक तर्क देते हैं कि इसके बजाय गरीबी के मापन के लिए अधिक विस्तृत अध्ययन किए जाने चाहिए.

- वैश्वीकरण से प्रभावित क्षेत्रों में प्रति दिन 2 डॉलर से कम पर जीने वालों का प्रतिशत बहुत अधिक कम हुआ है, जबकि अन्य क्षेत्रों में गरीबी की दर बहुत अधिक स्थिर बनी हुई है। चीन सहित, पूर्वी एशिया में, प्रतिशत में 50.1फीसदी की कमी आई है जबकि उप-सहारा अफ्रीका में 2.2% फीसदी की वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण विरोधी शब्द का प्रयोग उन लोगों तथा समूहों के राजनीतिक दृष्टिकोण का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जो वैश्वीकरण के आदर्श उदारवादी (neoliberal) स्वरुप का विरोध करते हैं।

"वैश्वीकरण विरोध" में ऐसी क्रियाएँ या प्रक्रियाएं शामिल हैं जो किसी राज्य के द्वारा इसकी संप्रभुता के प्रदर्शन के लिए और लोकतांत्रिक फैसले के लिए की जाती हैं। वैश्वीकरण विरोध लोगों, वस्तुओं और विचारधारा के अंतरराष्ट्रीय हस्तांतरण पर, रोक लगाने के लिए उत्पन्न हो सकता है, जो विशेष रूप से आईएमएफ (IMF) या विश्व व्यापार संगठन जैसे संगठनों द्वारा सुनिश्चित किए जाते हैं और जो स्थानीय सरकारों और आबादी पर मुक्त बाजार कट्टरवाद (free market fundamentalism) के कट्टरपंथी विनियमन कार्यक्रम में लागू होते हैं। इसके अतिरिक्त, कनाडा की पत्रकार नओमी क्लेन (Naomi Klein) अपनी पुस्तक No Logo: Taking Aim at the Brand Bullies (जिसका शीर्षक है कोई स्थान नहीं, कोई चुनाव नहीं, कोई नौकरियाँ नहीं) में तर्क देती हैं कि वैश्वीकरण विरोध या तो एक सामाजिक आंदोलन (social movement) को या एक सामूहिक शब्द (umbrella term) को निरूपित कर सकता है, इसमें कई अलग सामाजिक आन्दोलन

राष्ट्रवादी और समाजवादी शामिल हैं। किसी भी अन्य मामले में प्रतिभागी, बड़ी बहुराष्ट्रीय अविनयमित राजनितिक शक्ति के विरोध में खड़ा होता है, क्यों कि व्यापर समोझौतों के माध्यम से निगम की प्रक्रियाएं कुछ उदाहरणों में नागरिकों के लोकतान्त्रिक अधिकारों, वातावरण (environment) विशेष रूप से वायु गुणवत्ता सूचकांक (air quality index) और वन वर्षा (rain forests) को क्षति पहुंचाती हैं। साथ ही राष्ट्रीय सरकारों की संप्रभुता मजदूरों के अधिकारों (labor rights) को निर्धारित करती है जिसमें बेहतर वेतन, बेहतर कार्य स्थितियां या कानून शामिल हैं जो विकासशील देशों (developing countries) की सांस्कृतिक अभ्यासो और परम्पराओं का अतिक्रमण कर सकते हैं।

बहुत से लोग जिन पर "वैश्वीकरण विरोधी" होने की पहचान अंकित है वे इस शब्द को बहुत ही अस्पष्ट और अनुचित बताते हैं। पोडोनिक के अनुसार "अधिकांश समूह जो इन विरोधों में भाग लेते हैं वे अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क का समर्थन प्राप्त करते हैं और वे सामान्यतया वैश्वीकरण के फॉर्म जारी करते हैं जो लोकतंत्र को बढ़ावा देते हैं। प्रतिनिधित्व, मानव अधिकार और समतावाद."

जोसफ स्तिग्लित्ज़ और एंड्रयू चार्लटन लिखते हैं

इस दृष्टिकोण से युक्त सदस्य अपना वर्णन निम्न शब्दों के द्वारा करते हैं -विश्व न्याय आंदोलन (Global Justice Movement), निगम-विरोधी वैश्वीकरण आन्दोलन, आंदोलनों का आन्दोलन (इटली में एक लोकप्रिय शब्द), "वैश्वीकरण में परिवर्तन (Alter-globalization)" आन्दोलन (फ्रांस में लोकप्रिय), "गणक-वैश्वीकरण" आन्दोलन और ऐसे कई शब्द.[16]

वर्तमान में आर्थिक वैश्वीकरण के आलोचक इसके दो पहलुओं को देखते हैं, एक जैव मंडल में नज़र आ रही अपूरित क्षति और दूसरा कथित मानव लागत, जैसे गरीबी, असमानता, नस्लों की मिलावट, अन्याय में वृद्धि, पारंपरिक संस्कृति का क्षरण. आलोचकों के अनुसार ये सब वैश्वीकरण से सम्बंधित आर्थिक विरूपण के परिणाम हैं। वे सीधे मेट्रिक्स को चुनौती देते हैं, जैसे सकल घरेलू उत्पाद, जिसका उपयोग विश्व बैंक जैसी संस्थाओं के द्वारा प्रख्यापित प्रगति को मापने के लिए किया जाता है और अन्य कारकों पर दृष्टि रखने के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है जैसे नई अर्थशास्त्र नींव (New Economics Foundation) के द्वारा निर्मित खुश ग्रह सूचकांक (Happy Planet Index). वे "अंतर्संबंधित घातक परिणामों --सामाजिक विघटन, लोकतंत्र का विघटन, वातावरण में अधिक तीव्र और व्यापक गिरावट, नये रोगों के प्रसार, गरीबी और अलगाव की

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 6, June 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0506012 |

भावना में बढोतरी "[32]को इंगित करते हैं। इनके बारे में ये दावा करते हैं कि वैश्वीकरण के ये परिणाम अनापेक्षित लेकिन सत्य हैं।

वैश्वीकरण और वैश्वीकरण विरोधी शब्दों का प्रयोग कई प्रकार से किया जाता है।नोअम चोमस्की कहता है कि

आलोचकों का तर्क है कि :

- गरीब देशों को कभी कभी नुकसान उठाना पड़ता है: हालाँकि यह सत्य है कि वैश्वीकरण अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर देशों के बीच मुक्त व्यापार को बढ़ावा देता है, इसके ऋणात्मक परिणाम भी हैं क्योंकि कुछ देश अपने राष्ट्रीय बाजारों को बचाने की कोशिश करते हैं। गरीब देशों का मुख्य निर्यात आमतौर पर कृषि संबंधी सामान है। इन देशों के लिए मज़बूत देशों के साथ प्रतिस्पर्धा करना मुश्किल है क्योंकि वे अपने किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं। क्योंकि गरीब देशों में किसान प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते हैं, वे बाजार की तुलना में अपनी फसलों को कम कीमत पर बेचने के लिए मजबूर होते हैं।
- विदेशी गरीब श्रमिकों का शोषण: मजबूत औद्योगिक शक्तियों द्वारा गरीब देशों की सुरक्षा में गिरावट के परिणाम स्वरुप इन देशों में सस्ते श्रम के रूप में लोगों का शोषण होता है। सुरक्षा में कमी के कारण, प्रबल औद्योगिक राष्ट्रों की कम्पनियां श्रमिकों को असुरक्षित स्थितियों में लंबे समय तक काम करने के लिए लुभाने हेतु पर्याप्त वेतन की पेशकश करती हैं। हालाँकि अर्थशास्त्री इस बात पर सवाल उठाते हैं कि प्रतियोगी नियोक्ता बाजार में श्रमिकों को अनुमति देना "शोषण" माना जा सकता है।

सस्ते श्रम की प्रचुरता देशों को शक्ति तो दे रही है लेकिन राष्ट्रों के बीच असमानता को दूर नहीं कर पा रही है। यदि ये राष्ट्र औद्योगिक राष्ट्रों में विकसित हो जायें तो सस्ते श्रम की सेना विकास के साथ धीरे धीरे गायब हो जायेगी.यह सच है कि श्रमिक अपना काम छोड़ने के लिए स्वतंत्र हैं, लेकिन कई गरीब देशों में, इसका मतलब उसके या उसके पूरे परिवार के लिए भुखमरी होगा अगर पिछला रोजगार भी उनके लिए अब उपलब्ध न हो

सेवा कार्य में बदलाव: अपतटीय श्रमिकों की कम लागत निगमों के लिए उत्पादन को विदेशों में स्थानांतरित करना आसान बनाती है। अकुशल श्रमिकों को ऐसे सेवा क्षेत्र में लगाना जहाँ मजदूरी और लाभ कम है, लेकिन कारोबार उच्च है। इसने कुशल और अकुशल श्रमिकों के बीच आर्थिक अंतर को बढ़ाने में योगदान दिया है। इन नौकरियों की हानि ने मध्य वर्ग की धीमी गिरावट में योगदान दिया है जो संयुक्त राज्य अमेरिका में आर्थिक असमानता को बढ़ाने वाला मुख्य कारक है। वे परिवार जो कभी मध्यम वर्ग का हिस्सा थे, उन्हें नौकरियों में हुई भारी कटौतियों तथा अन्य देश से आउटसोर्सिंग ने अपेक्षाकृत निम्न स्थिति में ला दिया है। इसका यह भी तात्पर्य है कि निम्न वर्ग के लोगों को गरीबी में अधिक कठिन समय का सामना करना पड़ता है क्यों कि उनके पास मध्यम वर्ग की तरह आगे बढ़ने के लिए रास्तों का अभाव है। कमजोर श्रम संघों: हमेशा बढती हुई कम्पनियों की संख्या और सस्ते श्रम की अधिकता ने संयुक्त राज्य में श्रम संघों को कमजोर बनाया है। संघ अपनी प्रभावशीलता को खो देते हैं जब उनकी सदस्यता में कमी आने लगती है। इसके परिणाम स्वरुप संघों के पास निगमों की तुलना में कम शक्ति होती है, निगम कम मजदूरी के लिए श्रमिकों को बदल सकते हैं और उनके पास संघीय नौकरियों की पेशकश ना करने का विकल्प होता है।

दिसम्बर 2007 में, विश्व बैंक अर्थशास्त्री ब्रैंको मिलेनोविक ने विश्व में गरीबी और असमानता पर पहले से अधिक अनुभवजन्य अनुसंधान किया, क्योंकि उनके अनुसार क्रय शक्ति में सुधार इस बात को इंगित करता है कि विकास शील देश सोच से ज्यादा बुरी हालत में हैं। मिलेनोविक की टिप्पणी है कि "देशों के अभिसरण या अपसरण पर विद्वानों के सैंकडों कागजात ' पिछले दशक में, जिनमें आय पर हमारी जानकारी के आधार प्रकाशित हुए, अब गलत आंकड़े है।

नए आंकडों के साथ, अर्थशास्त्री गणना को संशोधित करेंगे और संभवतः नए निष्कर्ष तक पहुंचेगें" इसके अलावा ध्यान देने योग्य बात यह है कि वैश्विक असमानता और गरीबी के अनुमानों के लिए बहुत अधिक टिप्पणियाँ हैं। नई संख्याएँ वैश्विक असमानता को इतना अधिक दिखा रहीं हैं जितना कि घोर निराशावादी लेखकों ने भी नहीं सोचा था। पिछले महीने तक, वैश्विक असमानता, या विश्व के सभी व्यक्तियों के बीच वास्तविक आय में अंतर, लगभग 65 गिनी बिंदुओं का था--जहाँ 100 पूर्ण

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 6, June 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0506012 |

असमानता को तथा 0 पूर्ण समानता को दर्शाता है, यदि हर किसी की आय समान हो असमानता का स्तर दक्षिण अफ्रीका की तुलना में कुछ अधिक है। लेकिन नई संख्याएँ विश्व असमानता को 70 गिनी अंक दर्शाती है--असमानता का ऐसा स्तर जिसे पहले कभी भी कहीं भी दर्ज नहीं किया गया।"

वैश्वीकरण के आलोचक आमतौर पर इस बात पर जोर देते हैं कि वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो कि कॉर्पोरेट जगत के हितों के अनुसार मध्यस्थ है और प्रारूपिक रूप से वैकल्पिक वैश्विक संस्थाओं और नीतियों की सम्भावना को बढाती है। वे नीतियाँ जो पूरी दुनिया में गरीब और श्रमिक वर्ग के लिए नैतिक दावे करती हैं, साथ ही अधिक न्यायोचित तरीके से पर्यावरण से संबंधित है।

यह आन्दोलन बहुत बड़ा है इसमें चर्च समूह, राष्ट्रीय मुक्ति समूह, किसान (peasant), संघ जीवी, बुद्धिजीवी, कलाकार, सुरक्षावादी, अराजकतावादी (anarchists), शामिल हैं जो पुनर्स्थानीकरण और अन्य लोगों के समर्थन में हैं। कुछ सुधारवादी (reformist) हैं, (पूँजीवाद के अधिक मानवीय रूप के लिए तर्क देते हैं) जबकि अन्य क्रांतिकारी (revolutionary) हैं (वे पूंजीवाद से अधिक मानवीय प्रणाली पर विश्वास करते हैं और उसी के लिए तर्क देते हैं) और अन्य प्रतिक्रियावादी (reactionary) हैं, जिनका यह मानना है कि वैश्वीकरण राष्ट्रीय उद्योग और रोजगार को नष्ट कर देता है।[16]

हाल ही के आर्थिक वैश्वीकरण के आलोचकों के अनुसार इन प्रक्रियाओं के परिणाम स्वरुप देशों के बीच और उनके भीतर आय की असमानता बढ़ रही है। 2001 मे लिखे गए एक लेख से पता चला है कि 2001 में समाप्त हो रहे पिछले 20 वर्षों के दौरान 8 मेट्रिक्स में से 7 में आय में असमानता बढ़ी है। इसके साथ ही,दुनिया के निचले तबके में 1980 के दशक के बाद से आय वितरण में संभवत: बिल्कुल कमी हो गई है.इसके अलावा, निरपेक्ष गरीबी पर विश्व बैंक के आंकड़ों को चुनौती दी गई है। लेख में विश्व बैंक के इस दावे पर संशय व्यक्त किया गया है कि वे लोग जो प्रतिदिन एक डॉलर से कम पर जीवित रह रहे हैं, उनकी संख्या 1987 से 1998, में पक्षपाती पद्धति की वजह से 1.2 बिलियन पर स्थिर हो गई है

उचित व्यापार (fair trade) के सिद्धांत कर्ताओं के आर्थिक तर्क में दावा किया गया है कि अप्रतिबंधित मुक्त व्यापार (free trade) उन लोगों के लिए लाभकारी है जो गरीबों की कीमत पर वित्तीय उत्तोलन (financial leverage) (यानी अमीरों) से युक्त हैं.

अमेरिकीकरण उच्च राजनीतिक शक्ति के एक काल और अमेरिकी दुकानों, बाज़ारों और वस्तुओं के दूसरे देशों में ले जाए जाने में महत्वपूर्ण वृद्वि से संबंधित है। तो वैश्वीकरण, एक और अधिक विविधतापूर्ण घटना है, जो एक बहुपक्षीय राजनीतिक दुनिया से सम्बंधित है और वस्तुओं व बाजारों को अन्य देशों में बढ़ावा देती है।

वैश्वीकरण के कुछ विरोधी इस प्रक्रिया को निगमीय (corporatist) हितों की वृद्धि के रूप में देखते हैं। उनका यह भी दावा है कि बढ़ती हुई स्वायत्तता और कॉर्पोरेट संस्थाओं (corporate entities) की शक्ति देशों की राजनितिक नीतियों को आकार देती है।

2001 में पहली डब्ल्यूएसएफ ब्राजील में पोर्टो एलेग्रे (Porto Alegre) के प्रशासन की शुरुआत थी। वर्ल्ड सोशल फोरम का नारा था "एक और दुनिया मुमकिन है". डब्ल्यूएसएफ चार्टर सिद्धांतों को मंचों हेतु एक ढांचा प्रदान करने के लिए अपनाया गया था।

डब्ल्यूएसएफ एक आवधिक बैठक बन गया: 2002 और 2003 में इसे फिर से पोर्टो एलेग्रे में आयोजित किया गया था और इराक पर अमेरिकी आक्रमण के खिलाफ दुनिया भर में विरोध के लिए एक मिलाप बिन्दु बन गया। 2004 में इसे मुंबई (पूर्व में बम्बई, के रूप में जाना जाता था, भारत) में ले जाया गया, ताकि यह एशिया और अफ्रीका की आबादियों के लिए अधिक सुलभ बनाया जा सके.पिछली नियुक्ति में 75000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस दौरान, क्षेत्रीय मंचों ने डब्ल्यूएसएफ के उदाहरण का अनुसरण करते हुए इसके चार्टर के सिद्धांतों को अपनाया. पहला यूरोपीय सामाजिक मंच (European Social Forum) (ईएसएफ) नवंबर 2002 में फ्लोरेंस में आयोजित किया गया था।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 6, June 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0506012 |

नारा था "युद्ध के विरुद्ध, नस्लवाद के खिलाफ और नव उदारवाद के विरुद्ध "। इसमें 60,000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया और यह युद्ध के विरुद्ध एक विशाल प्रदर्शन के साथ ख़त्म हुआ। (आयोजकों के अनुसार प्रदर्शन में 10,00,000 लोग थे।) दो अन्य ESFs पेरिस और लन्दन में क्रमशः 2003 में और 2004 में हुए.

सामाजिक मंचों की भूमिका के बारे में हाल ही में आन्दोलन के पीछे कुछ चर्चा की गई है। कुछ इसे एक "लोकप्रिय विश्वविद्यालय" के रूप में देखते हैं। उनके अनुसार यह लोगों को वैश्वीकरण की समस्याओं के लिए जागृत करने का एक अवसर है। अन्य लोग पसन्द करेंगे कि प्रतिनिधि अपने प्रयासों को आन्दोलन के समन्वयन और संगठन पर केन्द्रित करें और नए अभियानों का नियोजन करें।

यद्यपि अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि प्रभावी देशों (विश्व के अधिकांश) में डब्ल्यूएसएफ एक 'गैर सरकारी संगठन मामले' से कुछ अधिक है, इन्हे उत्तरी एनजीओ व दाताओं के द्वारा चलाया जाता है जो गरीबों के लोकप्रिय आन्दोलनों के लिए शत्रुतापूर्ण हैं।[16]

संदर्भ

1. शैला एल.क्रोचर. वैश्वीकरण और संबंध: एक बदलती हुई दुनिया की पहचान की राजनीति.रोमैन और लिटिलफ़ील्ड .(२००४) . p.१०
2. ↑ वैश्वीकरण महान है ! Archived 2005-05-29 at the Wayback Machineटॉम जी. के द्वारा पामर, वरिष्ठ सहकर्मी, काटो संस्थान
3. ↑ फ्राइडमैन, थॉमस एल."संघर्ष को रोकने का डेल सिद्धांत."इमरजिन : एक पाठक.एड. बार्सले बेरियोस बोस्टन : बेडफ़ोर्ड, सेट मार्टिंस, २००८ .४९
4. ↑ "जी नेट, कॉर्पोरेट वैश्वीकरण, कोरिया और अंतरराष्ट्रीय मामले, नोअम चोमस्की का सन वू ली के द्वारा साक्षात्कार, मासिक जूंग आंग, २२ फ़रवरी २००६". मूल से 26 फ़रवरी 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 नवंबर 2008.
5. ↑ "Armageddon का युद्घ, अक्टूबर, 1897 पृष्ठ 365 -370". मूल से 5 जनवरी 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 नवंबर 2008.
6. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 12 जुलाई 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 नवंबर 2008.
7. ↑ "नोएम शोमस्की वाशिंगटन पोस्ट पाठकों के साथ चेट करते हैं, वाशिंगटन पोस्ट, २४ मार्च २००६". मूल से 12 नवंबर 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 नवंबर 2008.
8. ↑ स्टाइपो, फ्रांसेस्को . विश्व संघवादी घोषणा पत्र राजनीतिक वैश्वीकरण के लिए मार्गदर्शिका , ISBN 978-0-9794679-2-9, http://www.worldfederalistmanifesto.com Archived 2007-06-27 at the Wayback Machine
9. ↑ हर्स्ट ई.चार्ल्स सामाजिक असमानता : रूप, कारण और परिणाम, 6 ठा संस्करण .P.91
10. ↑ "1980 के दशक के प्रारम्भ से विश्व के सबसे गरीब लोगों ने कैसे प्रगति की है?"शाओहुआ चेन और मार्टिन रेवेलियन द्वारा. [3] Archived 2007-03-10 at the Wayback Machine
11. ↑ "मिशेल शोसुदोव्स्की, " ग्लोबल झूठी बातें "". मूल से 2 नवंबर 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 नवंबर 2008.
12. ↑ "डेविड ब्रुक्स, " गरीबी के बारे में अच्छी खबर "". मूल से 27 दिसंबर 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 नवंबर 2008.
13. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 19 अक्तूबर 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 नवंबर 2008.
14. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 17 जून 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 जून 2020.
15. ↑ "गाई पेफरमैन,'वैश्वीकरण का आठवां नुकसान'". मूल से 1 मई 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 नवंबर 2008.
16. ↑ "फ्रीडम हाउस". मूल से 18 अगस्त 2000 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 नवंबर 2008.

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor

7.54

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com